Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बाठेड़ा ठिकाने के रावत सूरतसिंह सारंगदेवोत का मेवाड़ इतिहास में योगदान

जसवंत सिंह राठौड़* डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत**

* राजकीय अध्यापक, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, आमड़ाई, कुम्भलगढ़-राजसमन्द (राज.) भारत
** सह-आचार्य (इतिहास) मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत

शोध सारांश – राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित रहे मेवाड़ राज्य का ठिकाना बाठेड़ा सारंगदेवोत सिसोदियों की जागीर में रहा जो 18 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में सूरतसिंघोत सारंगदेवोत सिसोदियों के जागीरी पट्टे में हुआ एवं तत्पश्चात इनकी ही जागीर में बना रहा। सूरत सिंह ने बांदनवाड़ा युद्ध में वीरता पूर्ण पराक्रम दिखाया।

शब्द कुंजी – बांदनवाड़ा, मेवाड़, सारंगदेवोत, सूरतसिंह, ठिकाना, बाठेड़ा।

प्रस्तावना – बाठरड़ा सूरतसिंघोत सारंगदेवोत सिसोदियों का द्वितीय श्रेणी अर्थात बत्तीसा का ठिकाना रहा है। महाराणा रायनल (1473-1507) के समय रावत सारंगदेव प्रथम ने सूरजमल खेमकरणोत की सहायता से बाठरड़ा और उसके आस-पास के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया था। कई वर्षों तक बंबोरा इनकी वतन-जागीर रही। महाराणा जगतसिंह प्रथम (1628-16520 और महाराणा राजसिंह प्रथम (1652-16805) कालीन जागीरदारों की पटटा बहियों से विदित होता है कि उस समय बाठरड़ा सारंगदेवोतों के पटटे में नहीं था। महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय के समय रावत महासिंह के छोटे भाई सूरतसिह को यह ठिकाना मिला।

रावत महासिंह के छोटे भाई सूरतसिंह सारंगदेवोत बठे ही स्वाभिमानी पुरुष हुए, जिनका जन्म विक्रम संवत् 1732 अर्थात 1675 ई. में हुआ था। बाठरता रावत महासिंह के छोटे भाई रावत सूरत सिंह महाराणा जयसिंह के पुत्र महाराजकुमार अमरसिंह की सेवा में रहते थे। महाराणा जयसिंह (1680-1698ई) एवं उनके पुत्र अमरसिंह के बीच कुछ कडवाहट होने से महाराजकुमार अमरसिंह उदयपुर से निकलकर बाठरड़ा आये और रावत महासिंह के भाई सूरतसिंह सहित अपने पास रहने वाले सरदारों को लेकर चित्तौड़गढ़ व अन्य इलाकों से होते हुए अपने ननिहाल बूंदी चले गये। महाराजकुमार ने बूंदी (हाडौती में स्थित हाता चौहानों का राज्य) से फौज खर्च लेकर मेवाड़ में आगमन किया और कुछ दिन अमरगढ़ में ठहरे। अमरगढ़ में अपने साथ के 44 सरदारों एवं उनके कुँवरों की अच्छी सेया व स्वामीभक्ति के कारण उनको रावत की पदवियों और ताजी में प्रदान की गई। इसके साथ ही आदेश दिया कि रावत की पदवी के अनुसार अवसर आने पर उनको जागीरी भी मिल जायेगी। महाराणा जयसिंह (1880-1698 ई.) एवं उनके पुत्र अमरसिंह के मध्य समझौता हो जाने के बाद भी रावत सूरतसिंह महाराजकुमार अमरसिंह की सेवा में राजनगर में ही हाजिर रहे।

जबकि भाणावत संग्रह में संगृहीत बाठेडा की तवारीख में बूंदी के स्थान पर रामपुरा स्थान का जिक्र कर रखा है जो कि गलत है। मेवाड़ महाराणा अमरसिंह द्वितीय की 1704 ई. की मेवाड ठाकुरा री साख बही में सारंगदेवोत जागीरदारों के जागीरी पट्टो की रेख 84600 टका और ऊपत 47301 रु. उल्लिखित है। रावत सुरतसिंघ मानसिंधोत के जागीरी पट्टे की रेख 20000 टका व ऊपत 10000 रु. थी।

इस प्रकार महाराणा जयसिंह की मृत्यु के बाद अमरसिंह 1698 ई. में पाट बैठे परंतु इन महाराणा अमरसिंह द्वितीय 08-1710) की गद्दीनशीनी के समय रावत सूरतसिंह को यथोचित मान-सम्मान नहीं मिला, इसलिए वह खिन्न होकर मालवा में स्थित चन्द्रावत सिसोदियों के राज्य में चले गए। इसके अनन्तर उक्त महाराणा अमरसिंह द्वितीय द्वारा खास रुक्का भेजे जाने पर वह 1707 ई. (वि.स. 1764) में उदयपुर वापस लौटे।

रावत सुरतसिंह महाराणा अमरसिंह द्वितीय से नाराज होकर रामपुरा चले जाते हैं और राव रतनसिंह सिसोदिया (चन्द्रावत) से जागीरी सहित 2000 रुपया माहवार अपने खर्च हेतु प्राप्त करते हुए रावत सुरतसिंह उनकी पाँच वर्ष तक सेवा करते हैं और मराठों से कई लड़ाइयाँ लड़ते हैं।

बाठरड़ा तवारीख में इसी सन्दर्भ में विवरण मिलता है कि जब महाराणा जयसिंह (1680-1698 ई) की मृत्यु हई, तो अमरसिंह द्वितीय (1698-1710ई) महाराणा बने। गद्दी पर बैठते ही कुछ लोगों के भड़काने पर कुछ सरदारों की ताजीमें माफ कर दी। जब यह बात रावत सुरतसिंह को पता चली तो उन्होंने आपत्ति प्रकट की। वे दरबार के दरीखाने में गए और छड़ीदार को नकीम (जुहार बोलकर मालुम करने को कहा) बोलने को कहा। छड़ीदार ने महाराणा की आज्ञा से माफ की गई ताजीम को बोलने में आगे-पीछे होने लगा तब सूरतसिंह ने छड़ीदार को तलवार की मूठ का इशारा कर मार डालने का संकेत दिया, तब छड़ीदार को भयवश रावत सूरतसिंह को मुजरा करने पर (जुहार करने पर) नकीम (ताजीम) बोलना ही पड़ा। उदार के नकीम बोलने पर महाराणा को खड़े होकर सूरतसिंह को उनकी 'जुहार-ताजीम' देनी ही पड़ी। इस बात से महाराणा सुरतसिंह से नाराज हो गये, जिससे सूरत सिंह दरबार की सेवा छोड़ कर अमरगढ़ चले गये। कुछ समय बाद सहाराणा को गलती महसूस हुई। महाराणा ने सूरतसिंह को उनके भाई महासिंह के मार्फत वापस बुला लिया।

रावत सूरतसिंह अपने ज्येष्ठ भ्राता रावत महासिंह के साथ महाराणा अमरसिंह द्वितीय और महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय की सेवा में रहे। बांधनवाडे के युद्ध में अपने भ्राता के साथ रहकर अतुल पराक्रम का परिचय दिया। रावत महासिंह रणबाजखां से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए और सूरतसिंह तलवारों के प्रहारों को झेलते हुए युद्ध में वीरतापूर्वक लड़े और नाहरखां नामक मेवाती मुगल मनसबदार सरदार को मारने के उपलक्ष्य में महाराणा संग्राम ने खुश होकर उन्हें 1711 ई. में बाठरड़ा की जागीर दी एवं रावत सुरतसिंह के मित्र सलुम्बर रावत केसरीसिंह के छोटे भाई सामंत सिंह को भी इसी उपलक्ष्य में बंबोरा की जागीर प्रदान की। बाठेड़ा रावत सूरतसिंह एवं रावत सामंत सिंह (बम्बोरा) दोनों को दूसरी श्रेणी का सामंत बनाया। इस प्रकार रावत सूरतसिंह को बाँधनवाड़े के युद्ध में वीरतापूर्वक युद्ध करने के कारण वि.स. 1767 आषाढ़ कृष्णा 2 (1711 ई.) को 47 ग्रामों सहित 22.000 रुपया वार्षिक आमदनी का जागीरी पट्टा प्राप्त हुआ।

मेवाड महाराणा अमरसिंह द्वितीय की 1704 ई. की श्मेवाड़ ठाकुरां री साख बही में रावत सुरतसिंघ मानसिंघोत के जागीरी पट्टे की रेख 20000 टका व ऊपत 10000 रु. थी।

1711 ई. में बांधनवाड़ा युद्ध में बाठरड़ा रावत मानसिंह के छठवें पुत्र सुरतसिंह द्वारा मेवाती सरदार नाहरखां सहित कई अन्य मुगल सैनिकों को मारकर मेवाड़ को विजय दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के उपलक्ष्य में महाराणा ने प्रसन्न होकर द्वितीय श्रेणी का बाठरडा का ठिकाना रावत की उपाधि सहित जागीर में प्रदान किया। पट्टे में अग्रानुसार उल्लिखित हैं कि– रावत सुरतसीध श्री मानसीघोत महाराणा अमरसीधजी जेसीघोत री वार माहे पटो पाया पटा माहे कसर पड़ी जदी रीसाए रामपुरे रावत रतनजी तींरे गया वठे झगड़ो हुयो जठे रावतजी रो आछो दीषो जणी ऊपरे पाछा बुलाया ने बदारे मया हुवो जठा पाछे हुरडे आगुचे राड़ हुई रावत सुरतसीधजी रे चोरासी लोह लागा जीव तस हुवो पाछा आय श्री द्रबार पगे लागा घोड़ा सरपाव् वदारो मया हुयो। अत्रो जाब मुष जबानी जणाता हा सो अमरसीघजी गुरड़ा (ठिकानों की वंशावली रखने वाले) बड़ा ने पुछे मंड़ायो हाल ऊपत आषर साल रु. 5900 री बरसात आधी वे तो बता ऊपजो नहीं वे तो ओछा उपजे वठे तो बरसात सु हीज नीपजे है। लषता रावत मोबतसीधजी अतरो जाब लषे जणी में बैठक री तो बुजे चौकस करणी ने दुजी वात में कसर वे तो तगसीरवार। दसगत सारंगदेओत अमरसीघजी रा।

रावत सूरतसिंह को शिकार का बहुत शौक था। उन्होंने महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय को विक्रम संवत् 1775 में जुवार या ज्वार के खेत में खेरोदा के पास शेर का शिकार करवाया। स्वयं रावत सूरत सिंह ने महाराणा के सामने एक सुनहरी शेर को ललकार कर तलवार से मारा। इस पर महाराणा ने खुश होकर सिरोपाव और सोने का लंगर प्रदान कर उनका सम्मान किया। बाठरडे में जलापूर्ति हेतु बस्ती से पूर्व की ओर बावडी और निवास हेतु महल बनवाये। इस प्रकार रावत सूरत सिंह ने अपनी बहादुराना कार्यवाहियों से हर तरह से महाराणा को खुश रखा और बाठेड़ा में महलों की बुनियाद डाली। इनकी मृत्यु (दि.स. 1798) 1741ई. में 66 वर्ष की उम्र में हई। इनके दो पुत्र हुए प्रतापसिंह व पदमसिंह। ज्येष्ठ कवर प्रताप सिंह का अपने पिता की विद्यमानता में ही कुंवरपदे 1718 ई. (वि.स. 1775) में निधन हो गया। उनके पीछे दो ठकुरानियाँ सती हुई। इस प्रकार रावत सूरतसिंह के ज्येष्ठ पुत्र कुँवर प्रतापसिंह कुँवरपदे ही असामयिक मृत्यु को प्राप्त हुए जबकि रावत सूरतसिंह के छोटे पुत्र पदमसिंह थे। कुँवर प्रतापसिंह के जोगीराम गुलाबसिंह जोरावरसिंह और कृष्ण सिंह नाम के चार पुत्र हुए जबकि रावत सूरतसिंह के छोटे पुत्र अर्थात् प्रतापसिंह के अनुज पदमसिंह को सीसवी की जागीर मिली।

इतिहासकार हुकम सिंहजी भाटी लिखित महावजस पुस्तक के अनुसार रावत सूरत सिंह के पाटवी ज्येष्ठ पुत्र प्रताप सिंह के पाटवी ज्येष्ठ पुत्र जोगीराम बाठरड़ा की गद्दी पर बैठे जबकि दूसरे पुत्र गुलाब सिंह को बांसा ठिकाना जागीर में मिला और चौथे पुत्र कृष्ण सिंह या किशन सिंह को खेरोदा के निकट स्थित गुढ़ा ठिकाना जागीर में प्राप्त हुआ। इसके विपरीत चान्दनमल संग्रह की बाठेड़ा तवारीख के अनुसार रावत जोगीराम के दुसरे भाई ठाकुर जोरावर सिंह को मेवाड़ के प्रथम श्रेणी के बिजोलियाँ ठिकाने से जागीर मिली। ज्ञातव्य है कि बाठेड़ा रावत एकलिंगदास की पुत्री का विवाह बिजोलिया ठिकाने के पंवार सामंत से हुआ था तभी संभवत विवाह के पश्चात् इन ठाकुर जोरावर सिंह को वहां जागीरी मिली। बिजोलियाँ ठिकाने के अभिलेखीय संग्रह से ज्ञात हुआ कि सवाई रावत उदयकर्ण सिंह के के पुत्र कुंवर शिवसिंह ने बाठेड़ा में विवाह किया था जो कि कुंवरपदे ही देवलोक हो गए थे। इनके पुत्र अर्थात् बाठेड़ा के भाणेज सवाई रावत केशवदास बिजोलियाँ की गद्दी पर बैठे। ठाकुर जोरावर सिंह के वंशजों के पास मकरेडी, आट व उम्मेदपुरा नामक तीन ठिकानों की अधीनस्थ जागीरदारी बिजोलियाँ में रही। चान्दनमल संग्रह की बाठेडा तवारीख के अनुसार रावत जोगीराम के तीसरे पुत्र ठाकुर कृष्ण या किशन सिंह को बासा या बांसा ठिकाना जागीर में मिला जबकि चोथे पुत्र गुलाब सिंह को गुढ़ा ठिकाना जागीर में प्राप्त हुआ। बांसा ठिकाने के स्वर्गीय ठाकुर भेरू सिंहजी और उनके पुत्र नारायण सिंहजी के पास संकलित वंशावली के अनुसार कृष्ण सिंह को बांसा एवं गुलाब सिंह को गुढ़ा की जागीर मिली।

रावत सूरत सिंह के चित्र से उनके तेजस्वी व आत्मस्वाभिमानी व्यक्तित्व का दर्शन होता है जिसमें उनको विशाल भाल पर दीर्घाकार रक्तिम आभायुक्त नेत्रों में कपोलस्पर्शी काप कलमों या जुल्फों सहित दर्शाया गया है। कंठाभरण को स्पर्श करती उनकी लम्बी मूंछें उन्हें रौद्र रूपी सिंह के रूप में अभिव्यक्त करती है। वो अपने बड़े भ्राताश्री रावत महासिंह के समान ही प्रचंड शरीर और विशाल वक्षधारी योद्धा थे जो अपने जीवन काल में मेवाड़ सहित रामपुरा तक सक्रिय रहे और मराठों के 18 वी शताब्दी के प्रथम दशक में ही प्रारम्भिक हस्तक्षेप के संभावित खतरों को महसूस करते हुए उनसे युद्धरत रहे और उन दक्खिनियों की लूटमार की गतिविधियों से मेवाड़ महाराणा को भी 18 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही सचेत कर चुके थे वो भी तब, जबकि वो महाराणा से नाराज होकर मालवा स्थित रामपुरा में जागीरी प्राप्त करके निवास कर रहे थे क्योंकि महाराणा अमरसिंह ने अपने किये गए वादों को नहीं निभाया और रावत सूरत सिंह को उचित ताजिम, इज्जत व जागीर नहीं प्रदान की। फिर भी मेवाड़ पर मराठों के खतरे को देखकर वो रामपुरा से भी अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम रखते हुए निरंतर मराठों के आक्रमणकारी लूटमार की गतिविधियों के सन्दर्भ में बाठेड़ा रावत महासिंह व महाराणा को पत्रों द्वारा सूचित करते रहे। बाठेड़ा तवारीख के आधार पर ये कहा जा सकता है कि वो मेवाड़ ही नहीं राजपुताना के भी प्रारम्भिक योद्धा थे जिन्होंने मराठों के विध्वंसात्मक चरित्र व लूटमार को सर्वप्रथम रामपुरा मालवा में रहते हुए ही जान लिया कि अब ये राजपुताना की और अग्रसर होंगे। ठाठपूर्ण राजसी वेशभूषा सहित कोण आकार की अमरशाही पाग एवं जामे के ऊपर ढालबंध या लाल रंग के बेल्ट में सांवले या ताम्रवणी रंग वाले इन योद्धा महापुरुष को शोभित मोक्तिक मालाएँ सहित कमर पर कटार धारण करना प्रिय रहा, जो कि उनके लडाकू व

सुजनकारी व्यक्तित्व को प्रतिबिंबित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. सं. भाटी हुकमसिंह, मज्जमिका, महावजस प्रकाश, भाग-13, पृ. 49, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर,1990ई. सं. पाण्डेय डॉ. ललित् शोध पत्रिका, वर्ष-60, अंक-1-4, पूर्णांक 238-241. पृ. 296-297,साहित्य संस्थान, उदयपुर
2. बाठरठा की अप्रकाशित तवारीख (प्रताप शोध प्रतिष्ठान,उदयपुर), पृ-9
3. वर्तमान का राजसमंद शहर जहीं झील के किनारे स्थित पहाड़ी पर निर्मित महलों में महाराजकुमार ने निवास किया।
4. बाठरड़ा की तवारीख (भाणावत संग्रह), पृ.सं.10-11स पाण्डेय डॉ. ललित, शोध पत्रिका वर्ष-60, अंक-1-4 पूर्णांक238-241,पृ.सं. 290,साहित्य संस्थान, उदयपुर
5. मालवा में नीमच के निकट स्थित चंद्रावत सिसोदियों का राज्य
6. स. भाटी हुकम सिंह, मज्जमिका, मेवाड जागीरदारां री विगत. पृ. 1,12,प्रताप शोध प्रतिष्ठान,उदयपुर
7. बाठरड़ा की तवारीख, (प्रताप शोध प्रतिष्ठान), पृ. 11. भाटी हुकमसिंह, महावजस प्रकाश, पृ. 49. सं. पाण्डेय डॉ. ललित, शोध पत्रिका वर्ष-60, अंक-1-4, पूर्णांक 238-241, पृ. 297
8. बाठरड़ा की तवारीख, (प्रताप शोध प्रतिष्ठान), पृ. 10-11
9. बाठरड़ा की तवारीख, (प्रताप शोध प्रतिष्ठान), पृ. 11-12 सं. पाण्डेय डॉ ललित, शोध पत्रिका, वर्ष-80, अंक-1-4, पूर्णांक,238-241,पृष्ठ सं. 296-297
10. बाठरड़ा की तवारीख, (प्र.श.प्र.उ.), पृ. 13-14
11. भाटी डॉ. हुकमसिंह, मज्झमिका, भाग-16, मेवाड़ जागीरदारां री विगत, पृ. 1-12, प्रताप शोध प्रतिष्ठान,उदयपुर
12. गौरीशंकर हीराचंद ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, पृष्ठ संख्या.517-519,राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर,2015
13. भाटी डॉ. हुकमसिंह, मेवाड़ जागीरदारां रे गाँव पट्टों राह मरजाद री हकीकत, पृ. 194-195, प्रताप शोध प्रतिष्ठान,उदयपुर
14. भाटी डॉ. हुकमसिंह, मेवाड़ जागीरदारां रे गाँव पट्टों राह मरजाद री हकीकत, पृ. 195
15. बाठरड़ा की तवारीख (प्र.श.प्र.उ.), पृ. 17-18यभाटी हुकमसिंह, महावजस प्रकाश, पृ. 49
16. बाठरड़ा की तवारीख, (प्र.शप्रत), पृ. 17-18 नकीम, जुहार, ताजीम अर्थात् सूरतसिंह जी की पदवी, उपाधियाँ, जागीर श्रेणी, इज्जत इत्यादि से इसका संबन्ध है।
17. बिजोलियाँ ठिकाने के अभिलेखीय संग्रह और स्वर्गीय सवाई राव चन्द्रवीर सिंह जी बिजोलियाँ का साक्षात्कार
18. कानोड़ ठिकाने में संगृहीत रावत सूरत सिंह के चित्र

****